घर पर उल्लू

अर्नोल्ड लोबेल

हिंदी: छाया भदौरिया

घर पर उल्लू

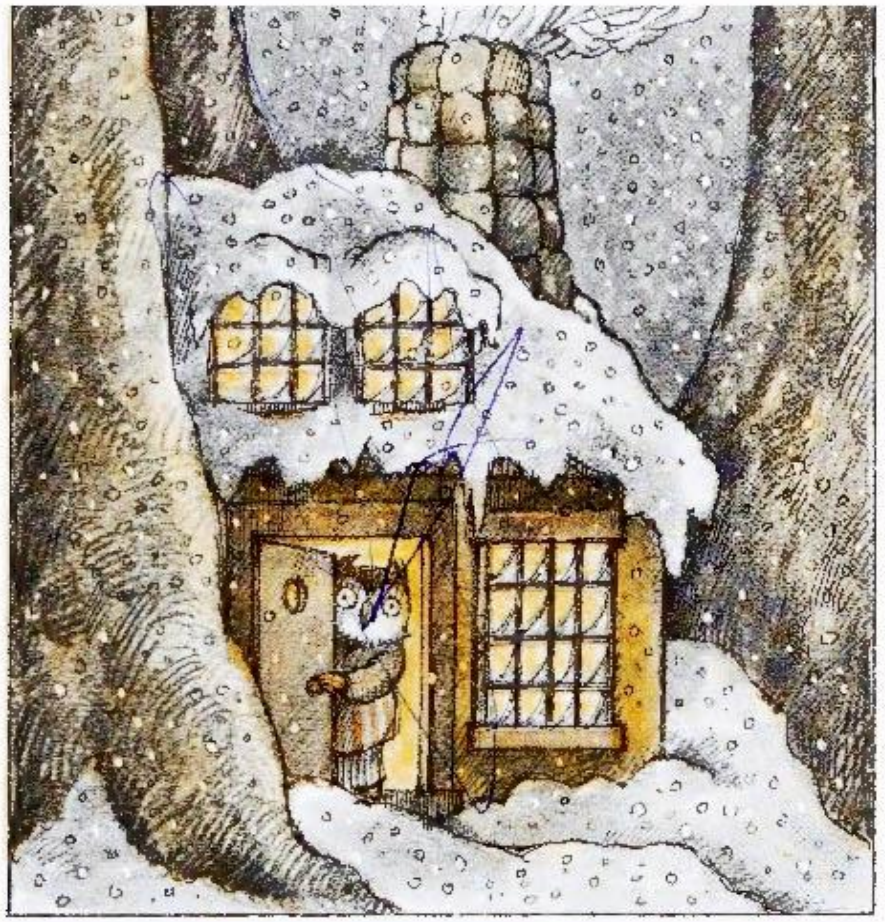

अर्नोल्ड लोबेल

हिंदी: छाया भदौरिया

विषय

अतिथि

अजीब गुम्मड़

आँसू वाली चाय

ऊपरी मंजिल, निचली मंजिल

उल्लू और चंद्रमा

अतिथि

उल्लू घर पर था।

उल्लू ने कहा, "इस आग के पास बैठना कितना अच्छा लगता है।"

"बाहर बहुत ठंड और बर्फ़बारी है।"

उल्लू रात के खाने में मक्खन लगा टोस्ट और गर्म मटर का सूप खा रहा था।

उल्लू ने सामने के दरवाज़े से एक तेज़

आवाज़ सुनी।

"ऐसी रात को बाहर कौन है,

जो मेरे दरवाजे को पीटे जा रहा है?"

उसने कहा।

उल्लू ने दरवाजा खोला।

लेकिन वहाँ कोई नहीं था।

केवल बर्फ और हवा थे।

उल्लू फिर से आग के पास बैठ गया।

दरवाज़े पर एक और तेज़ आवाज़ हुई।

“यह कौन हो सकता है,” उल्लू ने कहा,

“इतनी रात में मेरे दरवाजे को खटखटाए

और ठोके जा रहा है?”

उल्लू ने दरवाजा खोला।

वहाँ कोई नहीं था।

केवल बर्फ़ और ठंड।

"बेचारी बूढ़ी सर्दी मेरे दरवाजे

पर दस्तक दे रही है,"

उल्लू ने कहा।

“शायद यह आग के पास बैठना

चाहती है।

ठीक है, मैं सर्दी पर थोड़ी दया

दिखाकर उसे अंदर आने देता हूँ।”

उल्लू ने पूरा दरवाज़ा खोल दिया।

"अंदर आओ, सर्दी," उल्लू ने कहा।

“अंदर आओ और थोड़ी देर के लिए

खुद को गर्म कर लो।”

सर्दी घर में आ गई।

यह बहुत तेजी से आई।

ठंडी हवा ने उल्लू को दीवार

की तरफ़ धकेल दिया।

सर्दी कमरे में चारों ओर दौड़ने लगी।

इसने भट्टी में लगी आग को बुझा

दिया।

बर्फ़ सीढ़ियों पर घूमते हुए,

सरसराती हुई गलियारे तक आ गई।

"सर्दी!" उल्लू चिल्लाया.

"तुम मेरी मेहमान हो। यह बरताव का तरीका अच्छा नहीं है!" लेकिन सर्दी ने एक न सुनी। इससे खिड़की के शीशे खड़खड़ाने और काँपने लगे। इसने मटर के सूप को भी कठोर, हरी बर्फ़ में बदल दिया।

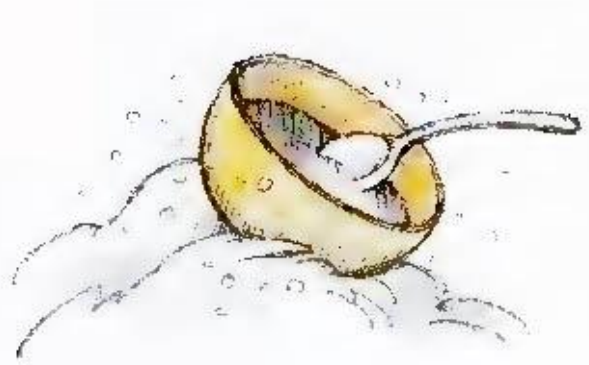

हवा इधर-उधर चलने लगी। तभी
सर्दी बाहर निकली और सामने का
दरवाज़ा धड़ाम से बंद कर दिया।
"अलविदा," उल्लू ने कहा,
“और वापस मत आना!"

सर्दी उल्लू के घर के सभी
कमरों में घुस गई। जल्द ही
सब कुछ बर्फ से ढक गया।
"तुम्हें अब यहाँ से चले जाना
चाहिए, सर्दी!“ उल्लू चिल्लाया।
"चली जाओ, अभी!"

उल्लू ने भट्टी में नई आग जला दी। कमरा फिर से गर्म हो गया। बर्फ पिघल गई। कठोर, हरी बर्फ वापस नरम मटर के सूप में बदल गई। उल्लू अपनी कुर्सी पर बैठ गया और चुपचाप अपना रात्रि भोज समाप्त किया।

अजीब गुम्मड़

उल्लू बिस्तर पर था। “मोमबत्ती बुझाकर सोने का समय हो गया है,” उसने उबासी लेते हुए कहा। तभी उल्लू ने अपने बिस्तर पर कंबल के नीचे दो गुम्मड़ देखे।“ वे अजीब गुम्मड़ क्या हो सकते हैं?" उल्लू ने कहा।

“क्या होगा अगर वे दो

अजीब गुम्मड़ बड़े और बड़े

होते चले गए और मैं सोता

ही रहूँ?” उल्लू ने कहा।

"यह तो ठीक नहीं होगा।"

उल्लू ने कम्बल उठा लिया। उसने पूरे बिस्तर को ठीक से देखा। उसे केवल अँधेरा ही दिखाई दे रहा था। उल्लू ने सोने की कोशिश की, लेकिन उसे नींद नहीं आई।

उल्लू ने अपना दाहिना पैर ऊपर-नीचे किया। दाहिनी ओर का गुम्मड़ ऊपर-नीचे होता गया।“ उन गुम्मड़ों में से एक हिल रहा है!" उल्लू ने कहा। उल्लू ने अपना बायाँ पैर ऊपर-नीचे किया। बाईं ओर का गुम्मड़ ऊपर-नीचे होता गया। "दूसरा गुम्मड़ हिल रहा है!“ उल्लू चिल्लाया।

उल्लू ने अपने बिस्तर से तकिया, चद्दर सभी कुछ हटा दिया। दोनों गुम्मड़ गायब हो गए। उल्लू ने देखा कि बिस्तर पर नीचे की तरफ़ सिर्फ़ उसके अपने दो पैर थे।

"लेकिन अब मुझे ठंड लग रही है," उल्लू ने कहा। "मैं फिर से अपने आप को कम्बल से ढँक लेता हूँ। "जैसे ही उसने ऐसा किया, उसे वही दो गुम्मड़ फिर से दिखाई दिए। "वे गुम्मड़ वापस आ गए हैं!" उल्लू चिल्लाया। "वे गुम्मड़ वापस आ गए, वापस आ गए! आज रात मैं सो ही नहीं सकता!"

उल्लू अपने बिस्तर के ऊपर उछल-कूद करने लगा।

"तुम कहाँ हो? तुम क्या हो?" वह रोया। धम और धड़ाम की आवाज़ के साथ बिस्तर नीचे गिर गया।

उल्लू सीढ़ियों से नीचे भागा। वह आग के पास अपनी कुर्सी पर बैठ गया। "मैं उन दो अजीब गुम्मड़ों को अपने बिस्तर पर अकेले ही बैठने दूँगा," उल्लू ने कहा। "जितना वे बड़ा होना चाहें, उन्हें बढ़ने दो। "मैं वहीं सोऊँगा, जहाँ मैं सुरक्षित हूँ।"

और वह वहीं सो गया।

आँसू वाली चाय

उल्लू ने केतली को अलमारी से बाहर निकाला।

उसने कहा, "आज रात मैं आँसुओं के पानी वाली चाय बनाऊँगा।"

उसने केतली अपनी गोद में रख ली।

"अब मैं शुरू करूँगा।" उल्लू ने कहा,

उल्लू एकदम शांत होकर बैठ गया।

उसने दुखी बातों के बारे में सोचना शुरू कर दिया।

"टूटी टाँगों वाली कुर्सियाँ,"

उल्लू ने कहा।

और उसकी आँखों से पानी बहने लगा।

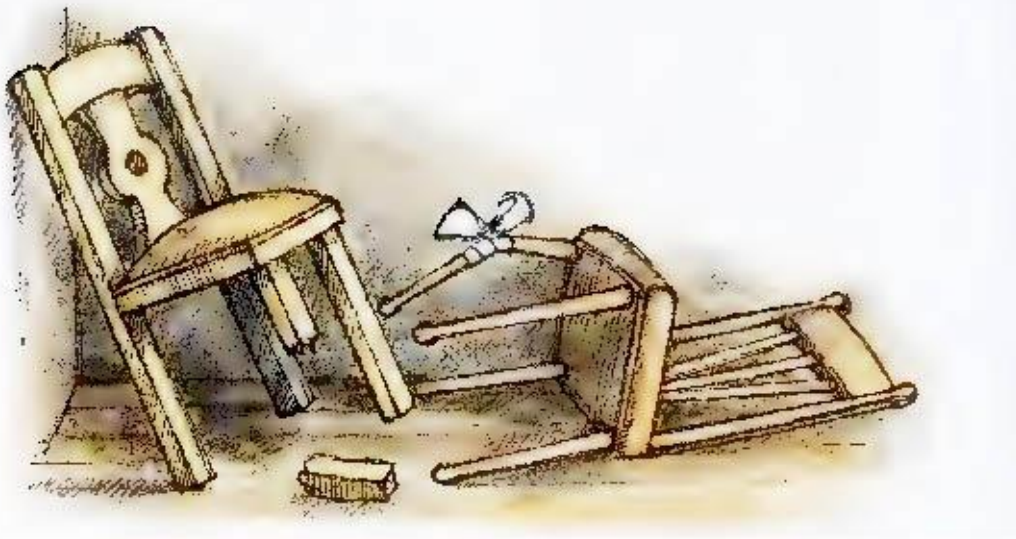

"ऐसे गीत जो गाए नहीं जा सकते,

उल्लू ने कहा,

"क्योंकि उसके बोल याद नहीं हैं।"

उल्लू रोने लगा।

एक बड़ा सा आँसू लुढ़ककर

केतली में जा गिरा।

"चम्मचें जो चूल्हे के पीछे गिर गईं

और फिर कभी मिली ही नहीं,"

उल्लू ने कहा,

और अधिक आँसू केतली में जा गिरे।

“ऐसी किताबें जो पढ़ी नहीं जा सकतीं,"

उल्लू ने कहा,

"क्योंकि उनके कुछ पन्ने फट गए हैं।"

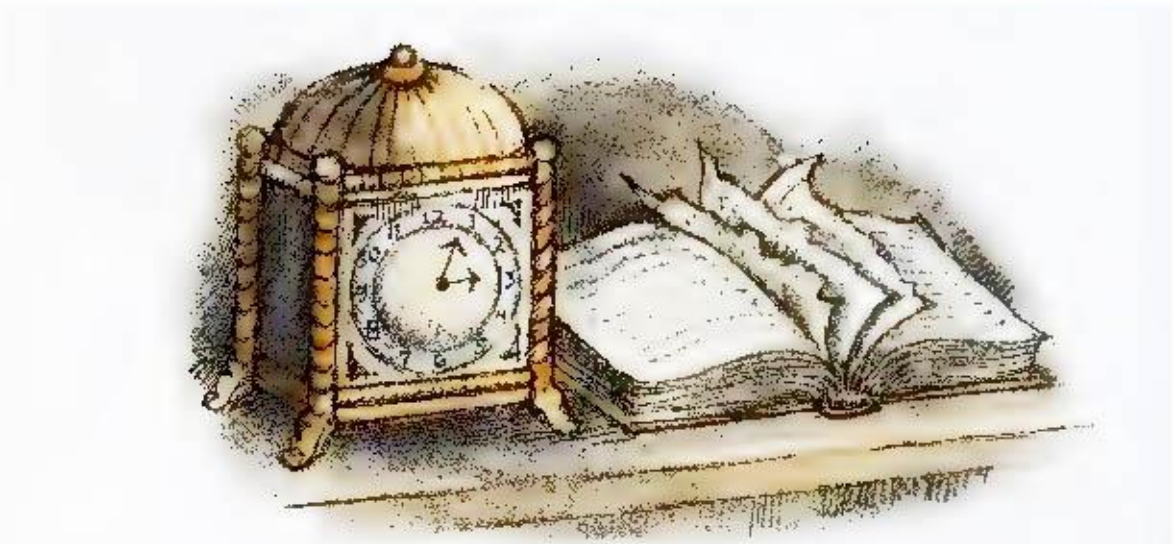

"घड़ियाँ जो रुक गई हैं,"

उल्लू ने कहा,

"उन्हें सुधारने वाला कोई नहीं है।"

उल्लू रो रहा था.

कई बड़े-बड़े आँसू केतली में जा गिरे।

“सुबह किसी ने उसे नहीं देखा

क्योंकि हर कोई सो रहा था,”

उल्लू सिसकने लगा।

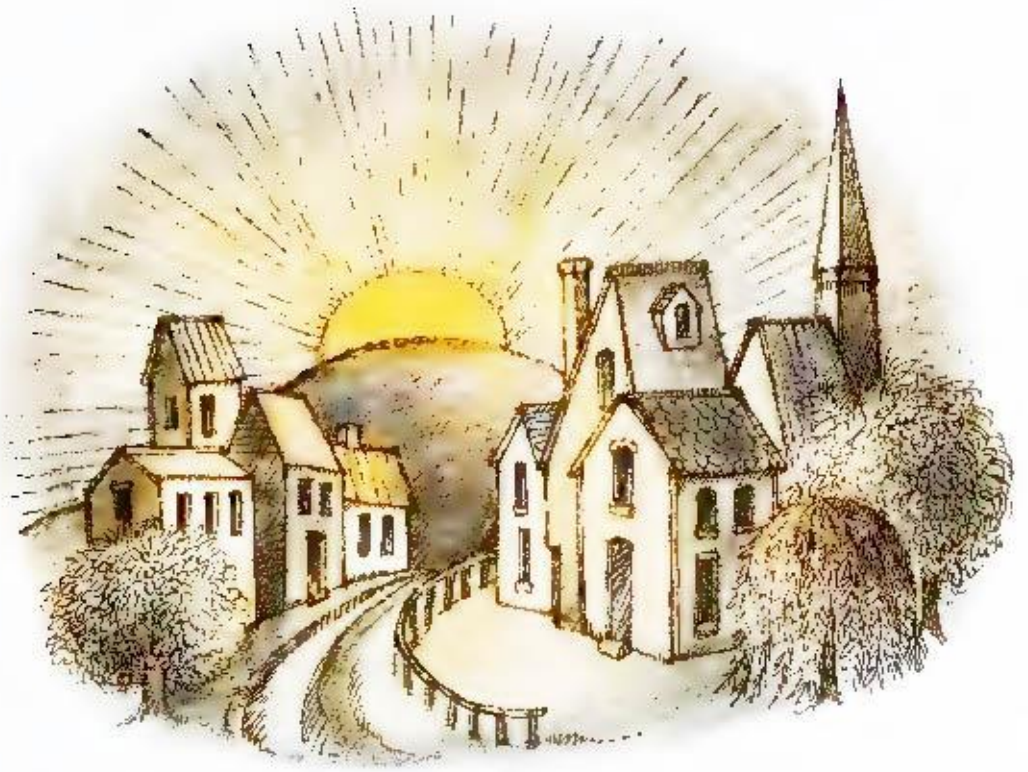

"मैश किए हुए आलू एक प्लेट में छोड़ दिए गए,"

वह चिल्लाया,

"क्योंकि कोई उन्हें खाना नहीं चाहता था।

और पेंसिलें जो उपयोग के लिए बहुत छोटी हैं,'

उल्लू ने और भी बहुत सी दुखद बातें सोचीं।

वह रोया और रोता ही गया।

जल्द ही पूरी केतली

आँसुओं से भर गई।

जैसे ही उल्लू ने अपना चाय का प्याला भरा,

वह बहुत ही खुश हुआ।

“इसका स्वाद थोड़ा सा नमकीन है,"

उसने कहा,

"लेकिन आँसू वाली चाय

हमेशा बहुत अच्छी होती है।"

“ठीक है,” उल्लू ने कहा।

“मेरा काम हो गया!”

उल्लू ने रोना बंद किया

और केतली को चूल्हे पर

चाय को उबालने के लिए रख दिया ।

ऊपरी मंजिल, निचली मंजिल

उल्लू के घर में एक ऊपर और एक नीचे की मंजिल थी। जीने में बीस सीढ़ियाँ थीं। कुछ समय उल्लू ऊपर अपने शयनकक्ष में रहता था। और बाकी समय में वह नीचे अपने बैठक कक्ष में रहता था।

जब उल्लू नीचे था तो उसने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि मेरी ऊपर वाली मंजिल कैसी है?“ जब उल्लू ऊपर था तो उसने कहा, “मुझे आश्चर्य है कि मेरी नीचे वाली मंजिल कैसी चल रही है?“ मैं हमेशा किसी न किसी जगह को मिस करता रहता हूँ।” उल्लू ने कहा, "कोई ऐसा रास्ता होना चाहिए कि मैं एक ही समय में दोनों जगह रहने का लुत्फ़ उठा सकूँ।"

"शायद अगर मैं बहुत तेज़ दौड़ूँ, तो मैं एक ही समय में दोनों जगहों पर हो सकता हूँ।" उल्लू सीढ़ियों से ऊपर भागा। उसने कहा, "मैं ऊपर हूँ।"

उल्लू सीढ़ियों से नीचे भागा। उसने कहा, "मैं नीचे हूँ।"

उल्लू सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे तेज़ी से भागने लगा। "उल्लू!" वह चिल्लाया। "क्या तुम नीचे हो?" पर कोई जवाब नहीं था। "नहीं," उल्लू ने कहा। “मैं नीचे नहीं हूँ, क्योंकि मैं ऊपरी मंजिल पर हूँ। मुझे जितना तेज़ दौड़ना चाहिए, उतना तेज़ मैं दौड़ नहीं पा रहा हूँ।

"उल्लू!" वह चिल्लाया। "क्या आप ऊपर हैं?" कोई जवाब नहीं था। "नहीं," उल्लू ने कहा। “मैं ऊपर नहीं हूँ क्योंकि मैं नीचे हूँ। मुझे और भी तेज़ दौड़ना होगा।”

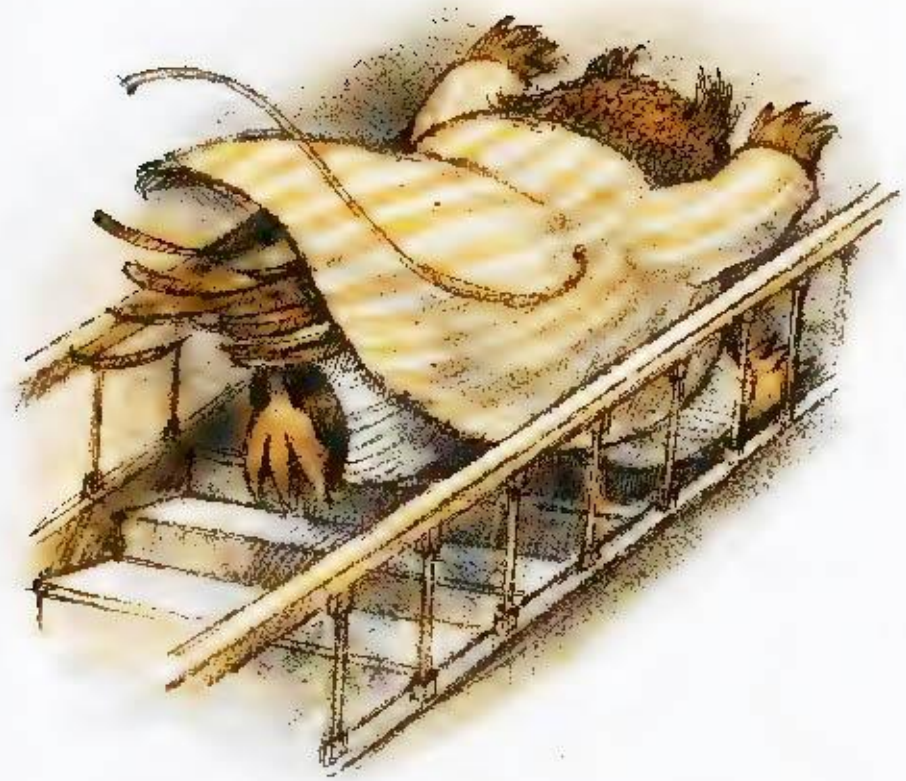

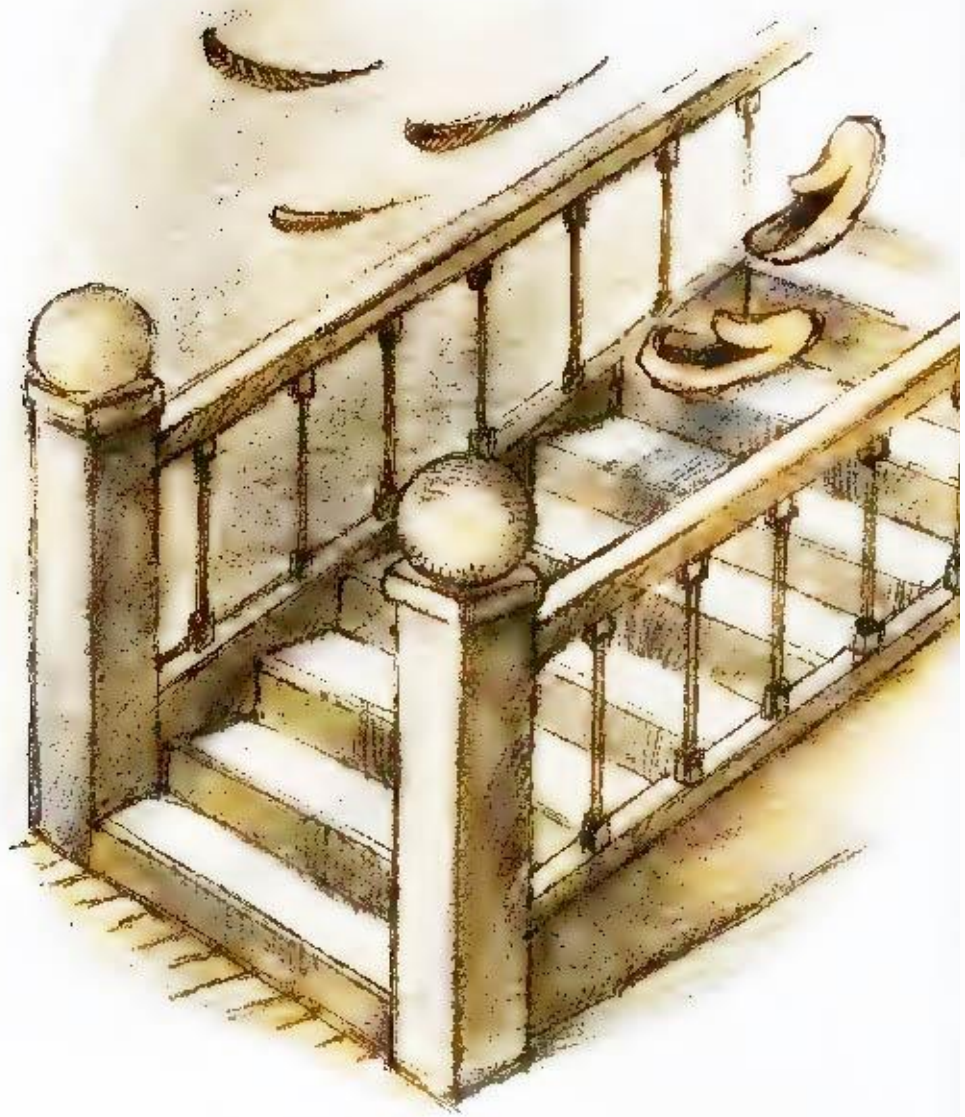

"तेज़, तेज़, और तेज़!" उल्लू चिल्लाया। उल्लू पूरी शाम ऊपर-नीचे दौड़ता रहा। लेकिन वह एक साथ दोनों जगह पर नहीं पहुँच सकता था।

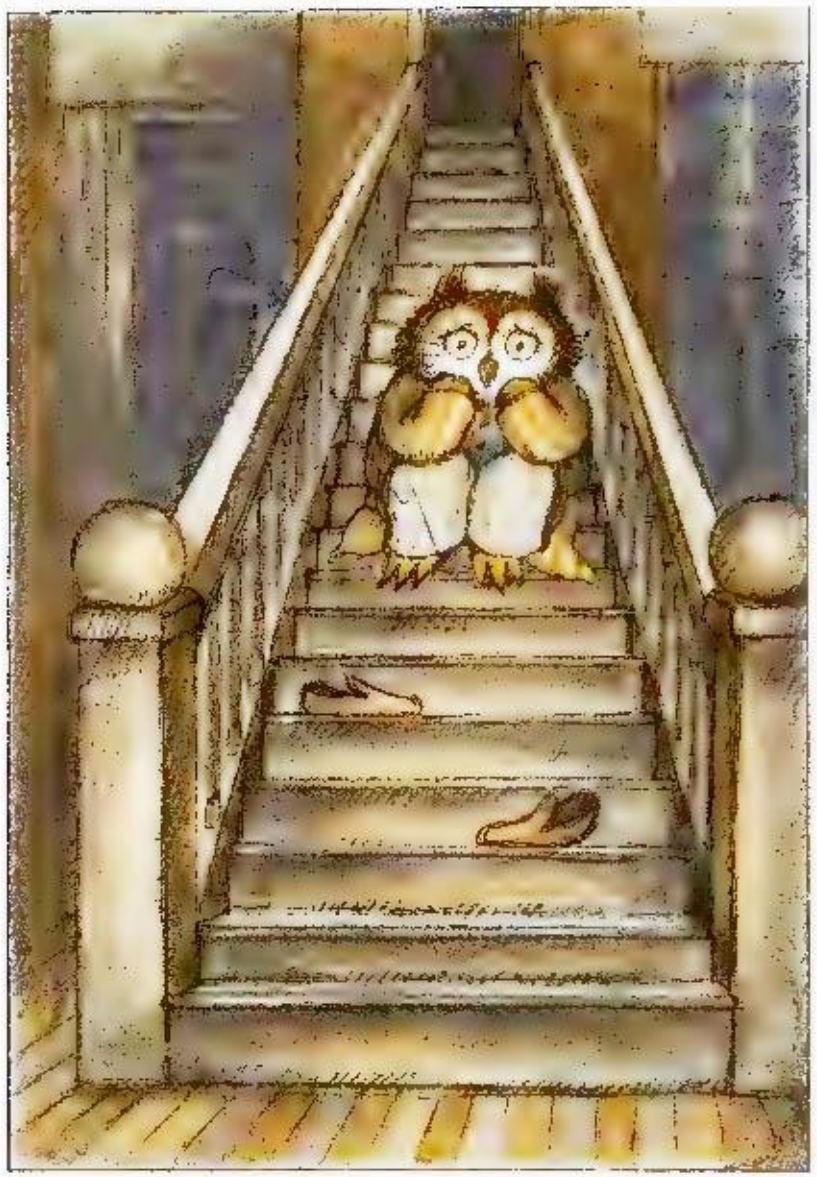

"जब मैं ऊपर होता हूँ," उल्लू ने कहा, "मैं नीचे नहीं होता। जब मैं नीचे होता हूँ तो ऊपर नहीं होता। मैं तो बहुत थक गया हूँ!" उल्लू आराम करने बैठ गया। वह दसवीं सीढ़ी पर बैठ गया क्योंकि यही वह स्थान था जो कि ठीक बीच में था।

उल्लू और चाँद

एक रात उल्लू समुद्र के किनारे गया। वह एक बड़ी चट्टान पर बैठ गया और लहरों को देखने लगा। चारों तरफ़ अँधेरा था।तभी चाँद का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र के किनारे से झाँकने लगा। उल्लू चाँद को देख रहा था। वह आकाश में ऊपर की ओर चढ़ता ही जा रहा था।

थोड़ी ही देर में एक पूरा गोल चाँद चमकने लगा। उल्लू चट्टान पर बैठ गया और बहुत देर तक चाँद को निहारता रहा।

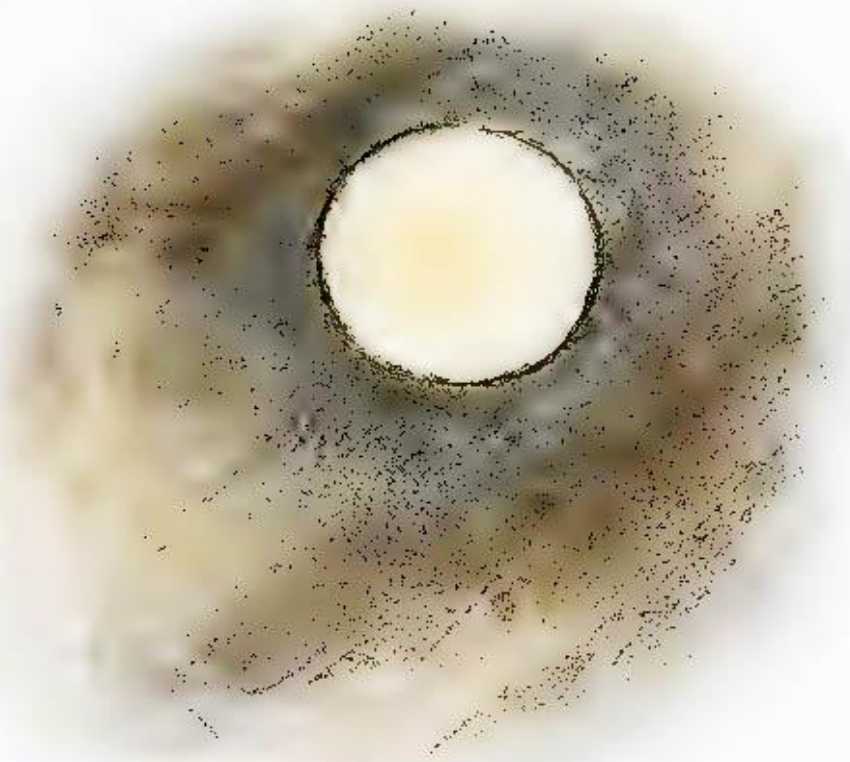

“अगर मैं तुम्हें देख रहा हूँ, चाँद, तो तुम भी मुझे देख रहे होगे। हमें बहुत अच्छे दोस्त बनना चाहिए।”

चाँद ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन उल्लू ने कहा, “मैं वापस आऊँगा और तुम्हें फिर से देखूँगा, चाँद। लेकिन अब मुझे घर जाना होगा।” उल्लू अपने रास्ते पर चल पड़ा। उसने आसमान की ओर देखा। चाँद अभी भी वहीं था। यह उसका पीछा कर रहा था।

"नहीं, नहीं, चाँद," उल्लू ने कहा। “यह तुम्हारी दयालुता है कि, तुमने मेरे रास्ते को रोशनी से भर दिया। लेकिन तुम्हें समुद्र के ऊपर ही रहना चाहिए जहाँ तुम बहुत अच्छे दिखते हो।” उल्लू थोड़ा आगे बढ़ा। उसने फिर आसमान की ओर देखा।

चाँद भी ठीक उसके साथ आ रहा था। "प्रिय चाँद," उल्लू ने कहा, "तुम्हें वास्तव में मेरे साथ घर नहीं आना चाहिए। मेरा घर छोटा है। तुम छोटे-से दरवाजे में से घुस नहीं पाओगे। और मेरे पास तुम्हें देने के लिए खाना भी नहीं है।”

उल्लू चलता रहा। चाँद पेड़ों के ऊपर पर से होता हुआ उसके पीछे-पीछे चलता रहा। "चाँद," उल्लू ने कहा, "मुझे लगता है कि तुमने मुझे सुना नहीं।" उल्लू एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। वह पूरी ताकत से चिल्लाया, "अलविदा, चाँद!"

चाँद बादलों के पीछे छिप गया। उल्लू ने देखा और देखा। चाँद जा चुका था। उल्लू ने कहा, "किसी दोस्त को अलविदा कहना हमेशा दुखदायी होता है।"

उल्लू घर आया। उसने अपना पाजामा पहना और बिस्तर पर चला गया। कमरे में बहुत अँधेरा था। उल्लू अब भी दुखी था।

अचानक, उल्लू का शयनकक्ष चाँदनी से भर गया। उल्लू ने खिड़की से बाहर देखा। चाँद बादलों के पीछे से निकल रहा था। “चाँद, तुम घर तक मेरे पीछे-पीछे आए। तुम कितने अच्छे और गोल-मटोल दोस्त हो!” उल्लू ने कहा।

फिर उल्लू ने अपना सिर तकिये पर रख लिया और अपनी आँखें बंद कर लीं। चाँद खिड़की से चमक रहा था। उल्लू बिल्कुल भी दुखी नहीं हुआ।

अंत